

वर्षों से श्मशान घाट पर रखे दो दर्जन से भी ज्यादा अस्थि कलश, सुध लेनेवाला कोई नहीं

बलिराम पांडेय बताते हैं कि पुराना में वर्णित है कि अस्थि कलश को समय से पवित्र जल में विसर्जित कर देना चाहिए

दीपक कुमार

बोकारो (आजाद सिपाही)। कहा जाता है कि यह संसार मोह माया है, जहां लोग सदियों तक न केवल अपने पूर्वजों की यादों संजोए रखते हैं। बल्कि उनके प्रति सम्मान का भाव भी रखते हैं। एक अर्थ में यही सांसारिक जीवन की खूबसूरती भी है। साथ ही, भारतीय संस्कृति की पहचान भी। किंतु, वर्तमान दौर में समाज का एक तबका इन परंपराओं से दूर होता जा रहा है। आमतौर पर लोग अपने परिजन की मृत्यु के बाद अग्नि संस्कार के उपरांत उनकी अस्थियों को मिट्टी के कलश में बांध कर श्मशान घाट में रखवा कर तीन दिन बाद उन

अस्थि कलश को किसी पवित्र नदी में प्रवाहित कर उनकी मोक्ष की प्रार्थना करते हैं, लेकिन अब हम आपको एक ऐसी सच्चाई से रूबरू करा रहे हैं, जो चास स्थित श्मशान घाट में देखने को मिली। यहां रखे दर्जनों अस्थि कलश वर्षों से मोक्ष की बात जोह रहे हैं, लेकिन उनकी सुध लेने वाला कोई भी नहीं।

समाज में ऐसे लोग भी है, जो अपने परिजन की अंतिम संस्कार करने के बाद श्मशान घाट में अस्थि कलश तो रखवा दी, परंतु वर्षों बाद भी उसे लेने कोई परिजन नहीं आये। उनके पूर्वजों की अस्थियां आज भी वहीं पड़ी हुई हैं। हालांकि इन अस्थि कलशों पर परिजनों के नाम-पते भी लिखे हुए हैं।

गरगा घाट श्मशान घाट की देखरेख करने वाले व्यवस्थापक लखन महता बताते हैं कि वर्षों से यहां ये अस्थि कलश रखे हुए है,



जिसने कोई भी अब तक लेने नहीं आया। एक अस्थि कलश तो 22 वर्षों से यहीं पड़ा हुआ है। वहीं श्मशान घाट पर वर्षों से विधि विधान कराने वाले बलिराम पांडेय बताते हैं कि पुराना में वर्णित है कि अस्थि कलश को समय से पवित्र जल में विसर्जित

कर देना चाहिए। बहरहाल वर्षों से यहां रखे अस्थि कलश को अपनों का इंतजार है। ऐसे में इन्हें मोक्ष मिलेगी तो आखिर कैसे। यह यक्ष प्रश्न है। पितृ मोक्ष की बात करें तो हिंदू (सनातन) धर्म की मान्यताओं के अनुसार पितृपक्ष का पखवारा अपने पितृ मोक्ष शांति के लिए पवित्र माना जाता है। लोग अपने पितरों को जल अर्पित कर उनकी मोक्ष मिलने की प्रार्थना करते हैं। गरुड़ पुराण के अनुसार भी ऐसा माना जाता है कि किसी के अंतिम संस्कार के बाद एक विशेष अनुष्ठान मृतक की आत्मा को पुनर्जन्म चक्र से मुक्त करने में सहायता करता है।

किसी भी शव के अंतिम संस्कार के बाद मृतक की अस्थियां एवं राख को एकत्रित कर पारंपरिक मिट्टी कलश में रख उन अवशेषों को किसी पवित्र नदी में प्रवाहित कर दिया जाता

है। माना जाता है कि ऐसा करने से मृत व्यक्ति की आत्मा को मोक्ष मिलती है और वे पुनर्जन्म चक्र से मुक्त हो जाते हैं। पितृपक्ष में ज्ञात अज्ञात सभी पूर्वजों का तर्पण, श्राद्ध और पिंडदान जैसे कर्मकांड किये जाते हैं, परंतु घाट पर रखे ये कलश समाज के एक ऐसे सच की उजागर करते हैं, जो शर्मसार करनेवाला है। वस्तुतः जीते-जी जिनका सम्मान हुआ हो या नहीं, लेकिन मृत्यु के बाद उनकी ऐसी अनदेखी सचमुच चिंतनीय है।

हालांकि इस कर्मकांड का एक वैज्ञानिक दृष्टिकोण भी है। दरअसल हड्डियों में गंधक और पानी का मेल पारा और मर्करी सल्फाइड शॉट बनाता है, जो पानी को शुद्ध करने के साथ साथ जल की जीवाणु नाशक क्षमता को भी बढ़ाता है। शायद यही कारण है कि हमारे पूर्वजों ने ऐसी परंपरा को बढ़ावा दिया।

सेवा पखवाड़ा को सफल बनाने को लेकर भाजपा महानगर की बैठक नरेंद्र मोदी का जीवन देश को समर्पित है : गणेश मिश्रा

आजाद सिपाही संवाददाता

रांची। आगामी 17 सितंबर को देश के प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के 75वें जन्मदिन से 2 अक्टूबर गांधी जयंती तक चलने वाला भाजपा के राष्ट्रीय कार्यक्रम सेवा पखवाड़ा को सफल बनाने के निमित्त रविवार को भाजपा, रांची महानगर कार्यालय में महानगर अध्यक्ष वरुण कुमार की अध्यक्षता में कार्यशाला हुई।

कार्यशाला में मुख्य रूप से प्रदेश के मंत्री एवं मुख्य वक्ता गणेश मिश्रा, रांची विधायक सीपी सिंह, हटिया विधायक नवीन जयसवाल, पूर्व जिलाध्यक्ष के के गुप्ता, प्रदेश प्रवक्ता प्रदीप सिन्हा, महामंत्री द्वय बलराम सिंह एवं जितेंद्र वर्मा उपस्थित रहे एवं कार्यशाला को संबोधित किया।

कार्यशाला को संबोधित करते हुए प्रदेश मंत्री गणेश मिश्रा ने कहा कि देश के प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी 17 सितंबर को 75 वर्ष पूर्ण कर रहे हैं। पार्टी ने 17 सितंबर से 2 अक्टूबर

गांधी-शास्त्री जयंती तक सेवा पखवाड़ा मनाने का निर्णय लिया है। उन्होंने कहा कि नरेंद्र मोदी का जीवन देश को समर्पित है। पार्टी के कार्यकर्ता 8 प्रकार के सेवा कार्यक्रम एक पखवाड़ा तक चलायेंगे। रांची विधायक सीपी ने कहा कि पार्टी कार्यकर्ता सेवा पखवाड़ा के माध्यम से जन-जन तक जाकर स्वच्छता अभियान, पौधरोपण, रक्तदान शिविर जैसे सेवा कार्य जनता के बीच जाकर करें।

विधायक नवीन जयसवाल ने कहा कि रचनात्मक कार्यक्रम से जनता में पार्टी की स्वीकार्यता बढ़ती है। भाजपा सिर्फ सत्ता के लिए नहीं, बल्कि जन सेवा के लिए कार्य करती है। महानगर अध्यक्ष वरुण साहू ने कहा कि सेवा पखवाड़ा के माध्यम से रांची के सभी 19 मंडलों के करीब 900 बूथों तक सेवा कार्य किया जावेगा। हर मंडल से 20 कार्यकर्ताओं की टोली बनायी गयी है। सेवा कार्य में पूरे राजधानी में 10

हजार कार्यकर्ता 15 दिनों तक लगाकर इस अभियान को सफल बनायेंगे।

कार्यशाला में प्रदेश के नेता सुबोध सिंह गुड्डा, रमेश सिंह, ऊषा पांडेय, संजय जयसवाल, अरुण झा, निशि जयसवाल, सुनील साहू, राजश्री जयंती, पंकज सिंहा, राजू सिंह, बसंत दास, अनीता वर्मा, संजीव चौधरी, विनय सिंह, विकास रवि, पूनम जयसवाल, विना मिश्रा, बालराई महतो, सोनु सिंह, पायल सोनी, रमित नारायण सिंह, राकेश शर्मा, रवि मुंडा, ओमप्रकाश पांडेय, अशोक मिश्रा, इंद्रजीत यादव, विशाल साहू, पप्पू जयसवाल, राम मनोज साहू, उमेश यादव, रामजी प्रसाद, पीयूष विजयवर्गीय, रामलगन राम, सुबेश पांडेय, रणधीर सिंह, सुभाष अग्रवाल, सुजीत शर्मा, नवीन सोनी, अशोक मिश्रा, विनोद महतो, ऋषभ गखड़ सहित सैकड़ों कार्यकर्ता शामिल रहे।

सूर्या हांसदा हत्या मामले की सीबीआई जांच हो : बाबूलाल नगड़ी के रैयतों को जमीन वापसी को लेकर सभी प्रखंडों में प्रदर्शन

आजाद सिपाही संवाददाता

रांची। भाजपा प्रदेश अध्यक्ष और नेता प्रतिपक्ष बाबूलाल मरांडी ने रविवार को प्रेस वार्ता के माध्यम से राज्य सरकार पर बड़ा निशाना साधा है। बाबूलाल ने कहा कि सामाजिक और राजनीतिक कार्यकर्ता सूर्या हांसदा की पुलिस द्वारा की गयी नृशंस हत्या और नगड़ी के आदिवासी रैयतों से रिम्स-2 के नाम पर राज्य सरकार द्वारा जमीन छीने जाने को भाजपा ने गंभीरता से लेकर है। पार्टी ने पहले भी सदन से लेकर सड़क तक आवाज बुलंद की है, लेकिन राज्य सरकार अपनी जिद पर अड़ी है। इसलिए भाजपा फिर इस मुद्दे को लेकर जोरदार आंदोलन करने जा रही। बाबूलाल मरांडी ने पार्टी द्वारा आगामी 11 सितंबर को दोनों

मुद्दों को लेकर राज्य के सभी 216 प्रखंडों में प्रदर्शन कर महामहिम राज्यपाल के नाम से प्रखंड विकास अधिकारी को ज्ञापन सौंपने का कार्यक्रम तय किया है।

बाबूलाल ने कहा कि सूर्या हांसदा मामले को राज्य पुलिस एनकाउंटर बता रही है, लेकिन

उसकी बेरहमी से हत्या की गयी है। दूसरी ओर नगड़ी रांची में आदिवासी रैयतों की खेतिहर जमीन सरकार रिम्स 2 के नाम पर छीन रही है। बाबूलाल ने कहा कि अवैध खनन माफियाओं दलाल, बिचौलियों ने स्व. सूर्या हांसदा को रास्ते से हटाने के लिए सुनियोजित

तरीका अपनाया। देवघर जिला के मोहनपुर ले जाकर उन्हें थर्ड डिग्री टॉचर किया गया। उनके शरीर पर पाये जानेवाले बड़े-बड़े धब्बे यह साबित कर रहे। और फिर जब उनकी मौत हो गयी, तो उन्हें गोली मारी गयी। उन्होंने कहा कि प्रेस तक को घटनास्थल से दूर रखा गया और पोस्टमार्टम के बाद शव को सौंपा गया। पुलिस द्वारा बताये गये तथाकथित एनकाउंटर स्थल पर खून के छिटे भी नहीं पाये गये, जिससे बिल्कुल साफ है कि उनकी हत्या की गयी है। बाबूलाल मरांडी ने घोषणा की कि दोनों मुद्दों पर आगामी 11 सितंबर को भाजपा के लाखों कार्यकर्ता प्रदर्शन में शामिल होंगे। अलग अलग प्रखंडों में प्रदर्शन कर महामहिम राज्यपाल के नाम ज्ञापन सौंपा जायेगा।

केंद्रीय कार्यालय में आजसू रांची महानगर की बैठक आजसू कार्यकर्ता अभी से ही नगर निकाय चुनाव की तैयारी में जुट जायें : सुदेश महतो

योजनाएं सिर्फ कागजों में, जमीन पर नतीजे शुरू

आजाद सिपाही संवाददाता

रांची। आजसू पार्टी के केंद्रीय कार्यालय में रांची महानगर की बैठक आयोजित की गयी। बैठक में पार्टी के केंद्रीय अध्यक्ष एवं झारखंड के पूर्व उपमुख्यमंत्री सुदेश महतो उपस्थित रहे। बैठक में रांची महानगर क्षेत्र में संगठन को मजबूत करने, जनता की समस्याओं को प्राथमिकता देने तथा आगामी रणनीति पर चर्चा की गयी। सुदेश महतो ने कार्यकर्ताओं को निर्देश दिया कि संगठन विस्तार के साथ-साथ प्रत्येक वार्ड और गली तक पहुंचकर आम जन की आवाज को आगे बढ़ायें। उन्होंने कहा कि कार्यकर्ता नगर निकाय चुनाव की तैयारी में जुट जायें।

बैठक के बाद मीडिया से बात करते हुए सुदेश महतो ने कहा कि वर्तमान सरकार नगर निकाय चुनाव को लेकर गंभीर नहीं है। ओबीसी आरक्षण को समाप्त कर बड़ी आबादी को उनके अधिकार से वंचित किया गया है। इस विषय पर आजसू पार्टी ने पंचायत चुनाव के दौरान भी सर्वोच्च न्यायालय का दरवाजा खटखटाया और

न्यायालय के निर्देशानुसार ट्रिपल टेस्ट प्रक्रिया को सुनिश्चित कराया, लेकिन सरकार नगर निकायों में सही ढंग से प्रक्रिया पूरी करने की इच्छाशक्ति नहीं दिखा रही है।

विस्थापन के मुद्दे पर भी उन्होंने गंभीर चिंता व्यक्त की। सुदेश महतो ने कहा कि पिछले सौ वर्षों से खनन कार्य चल रहा है। आज तीसरी पीढ़ी अपने अधिकार की मांग कर रही है, लेकिन सरकार केवल कागजी आंकड़ों के सहारे आंखों में धूल झोंकने का काम कर रही है। उन्होंने मांग की कि विस्थापन संबंधी विषयों पर विचार और समाधान के लिए एक स्वतंत्र आयोग का गठन किया जाये। वर्तमान आयोग

आधिकारविहीन बनाया गया है। कुड़मी समाज को अनुसूचित जनजाति में शामिल करने के विषय पर भी चर्चा हुई। इस पर सुदेश महतो ने कहा कि यह केवल एक वर्ग की नहीं, बल्कि उन तमाम समुदायों की मांग है, जो लंबे समय से अपने अधिकार से वंचित हैं। बड़े समुदायों को अलग-थलग रख कर न्याय नहीं किया जा सकता। पार्टी का स्पष्ट मत है कि सभी वंचित समाजों को उनका हक मिलना चाहिए।

बैठक में घर वापसी कार्यक्रम के तहत हरित पार्टी के कोकर मंडल के पूर्व अध्यक्ष लाल महतो एवं उनकी टीम तथा पूर्व कार्यकारी अध्यक्ष रांची

विश्वविद्यालय विक्की वर्मा आजसू परिवार में शामिल हुए।

बैठक में मुख्य रूप से उपस्थित रहे : बुद्धिजीवी मंच के केंद्रीय अध्यक्ष डोमन सिंह मुंडा, केंद्रीय सचिव जितेंद्र सिंह, केंद्रीय महासचिव सरजीत गुप्ता, केंद्रीय सचिव कुमुद वर्मा, केंद्रीय सचिव नईम अंसारी, बुद्धिजीवी मंच के सदस्य सह मीडिया प्रभारी मनोज महतो, बुद्धिजीवी मंच के प्रधान महासचिव मुकुंद मेहता, केंद्रीय सचिव सह महानगर प्रभारी जितेंद्र सिंह, महिला महानगर अध्यक्ष सीम सिंह, केंद्रीय सदस्य प्रभा महतो, छात्र संघ के प्रदेश अध्यक्ष ओम वर्मा, पूर्व महानगर अध्यक्ष मेरी तिकी, युवा आजसू के प्रदेश

संयोजक ज्योत्सना केरकेट्टा, सत्येंद्र सिंह, केंद्रीय सचिव विजेता वर्मा तथा केंद्रीय मीडिया संयोजक परवाज खान।

रांची महानगर के पदाधिकारियों में रांची महानगर अध्यक्ष सह केंद्रीय प्रवक्ता ज्ञान सिंहा, वरीय उपाध्यक्ष बंटी यादव, महासचिव रमेश गुप्ता, उपाध्यक्ष आशीष पाठक, वीरेंद्र प्रसाद, राकेश सिंह, प्रदीप जायसवाल, सचिव अनिल गुप्ता, जय श्रीवास्तव, अभिषेक राज नायक, निर्मल उरांव, महानगर संयोजक सुरेंद्र लिंडा, महादेव मुंडा, केंद्रीय सचिव हरीश कुमार, प्रदेश युवा संयोजक चेतन प्रकाश और अमित कुमार शामिल रहे।

भाजपा समानांतर सरकार चलाने के भ्रम से बाहर निकल कर विकास में सहयोग करे : विनोद पांडेय

भाजपा सत्ता से बेदखली का मातम अब तक नहीं मना पायी : विनोद पांडेय

आजाद सिपाही संवाददाता

रांची। झारखंड मुक्ति मोर्चा के महासचिव सह प्रवक्ता विनोद पांडेय ने भाजपा प्रदेश अध्यक्ष बाबूलाल मरांडी द्वारा लगाये गये आरोपों को सिरे से खारिज करते हुए कहा कि सत्ता से बेदखल भाजपा को आज भी समानांतर सरकार चलाने का भ्रम हो गया है। हर मुद्दे पर भ्रम फैला कर जनता को गुमराह करना ही भाजपा का एजेंडा है। श्री पांडेय ने कहा कि सूर्या हांसदा प्रकरण में भाजपा जिस तरह से राजनीतिक लाभ उठाने का प्रयास कर रही है, वह आदिवासी समाज का अपमान है। झामुमो के वरिष्ठ आदिवासी नेता एवं विधायक हेमलाल मुर्मू पहले ही सूर्या के अपराधिक जीवन का पूरा विवरण सार्वजनिक कर चुके हैं। ऐसे व्यक्ति को सामाजिक कार्यकर्ता बता कर भाजपा जनता की आंखों में धूल झोंकने का प्रयास कर रही है। उन्होंने कहा कि भाजपा नेताओं को प्रदेश की जनता को बताना चाहिए कि आखिर सूर्या पर दर्ज 24 से अधिक मुकदमों का सच क्या था।

सच तो यह है कि प्रदेश की लोकप्रिय हेमंत सरकार को अस्थिर करने का पद्धत्य त्याग दे।

नगड़ी भूमि विवाद पर प्रतिक्रिया देते हुए श्री पांडेय ने कहा कि भाजपा जानबूझ कर आधे-अधूरे तथ्यों को पेश कर रही है। रैयतों की भावनाओं का सम्मान हेमंत सरकार ने किया है और विकास के साथ अधिकारों

की रक्षा सुनिश्चित कर रही है। जमीन अधिग्रहण का निर्णय पूर्ववर्ती सरकारों में लिया गया था, जिसे लेकर संघर्ष भी हुआ। हेमंत सरकार ने हमेशा संवाद की पहल की है, लेकिन भाजपा सस्ती राजनीति के लिए किसानों को भड़काने से बाज नहीं आ रही।

श्री पांडेय ने कहा कि यदि बाबूलाल मरांडी सचमुच आदिवासी समाज और गरीबों के हितैषी हैं, तो केंद्र की भाजपा सरकार से झारखंड के बकाया खनिज राजस्व, विशेष पैकेज और एमएसपी की गारंटी की मांग करें।

उन्होंने कहा कि भाजपा नेताओं को चाहिए कि वे झूठ की राजनीति छोड़ कर जनता की भावनाओं के अनुरूप सकारात्मक सहयोग करें। हेमंत सोरेन के नेतृत्व में झारखंड को विकास की नयी ऊंचाइयों पर ले जाना हमारी प्राथमिकता है।

●●●●●

●●●●●

●●●●●

●●●●●

●●●●●

●●●●●

वित्त मंत्री राधाकृष्ण किशोर ने शपथ पत्र भर कर जनता को दिया नेत्रदान का संदेश

आजाद सिपाही संवाददाता

रांची। रविवार को 40वें राष्ट्रीय नेत्रदान पखवाड़ा में ब्लाईंड फोल्डेड रन फॉर विजन का भव्य आयोजन आई डोनेशन अवेयरनेस क्लब एवं कश्यप मेमोरियल आई बैंक के संयुक्त तत्वावधान में संत जेवियर्स कॉलेज परिसर, रांची में किया गया। मुख्य अतिथि वित्त मंत्री राधाकृष्ण किशोर ने दौड़ को रंग-बिरंगे बैलूनों को आसमान में उड़ाते हुए रवाना किया। इस दौड़ में संत जेवियर्स कॉलेज एवं उर्सुलाइन इंटर कॉलेज रांची, एनएसएस के सैकड़ों युवाओं एवं शहर के कई गणमान्य लोगों ने लिया भाग। ब्लाईंड फोल्डेड रन के बाद नेत्रदान जागरूकता रैली निकाली गयी। इसमें वित्तमंत्री राधाकृष्ण किशोर आइएमए रांची एवं झारखंड, झारखंड स्टेट सर्विस एसोसिएशन, एफजेसीसीआई, सेंट जेवियर्स कॉलेज रांची एवं उर्सुलाइन इंटर कॉलेज रांची के पदाधिकारियों ने भाग लिया। कार्यक्रम का स्वागत भाषण आई डोनेशन अवेयरनेस क्लब के अध्यक्ष अनुज सिन्हा के द्वारा प्रस्तुत किया गया। पिछले 7 वर्षों से रन फॉर विजन का रन की थीम ब्लाईंड फोल्ड रखी जा रही है। इस आयोजन का मुख्य उद्देश्य लोगों को नेत्रदान के प्रति जागरूक करना था।

रन फॉर विजन के विजेताओं को आई-डेक प्रेजेंटेंट अनुज सिन्हा, रजिस्ट्रार सेंट जेवियर्स कॉलेज डॉ फादर प्रभात केनेडी

■ मृत्युपरंत नैत्रदान करने वाले 30 परिवारों को वित्तमंत्री राधाकृष्ण किशोर ने किया सम्मानित

■ नेत्रदान जागरूकता के लिए ब्लाईंड फोल्डेड रन फॉर विजन में युवाओं ने दौड़ लगायी

■ लगातार 23 सालों से हो रहा रन फॉर विजन एवं 7 वर्षों से ब्लाईंड फोल्डेड रन फॉर विजन का आयोजन

■ कश्यप मेमोरियल आई बैंक में अब तक करीब 1015 कॉर्निया ट्रांसप्लांट



सोरेंग, डॉ प्रोफेसर अनिबर्न गुप्ता, आइएमए झारखंड के सचिव डॉ प्रदीप सिंह, आइएमए रांची के अध्यक्ष डॉ शेखर चौधरी, झारखण्ड स्टेट सर्विस एसोसिएशन के अध्यक्ष डॉ बिमलेश सिंह, एफजेसीसीआई रांची के अध्यक्ष पंरेश गट्टानी, पदमश्री मुकुंद नायक एवं कश्यप मेमोरियल आई हॉस्पिटल के डायरेक्टर डॉ बीपी कश्यप द्वारा सम्मानित किया गया। नेत्रदान जागरूकता को बढ़ावा देने के लिए आइएमए रांची एवं झारखंड, झारखंड स्टेट सर्विस एसोसिएशन, एफजेसीसीआई, सेंट जेवियर्स कॉलेज रांची एवं

उर्सुलाइन इंटर कॉलेज रांची के पदाधिकारियों को सम्मानित किया गया। डॉ भारती कश्यप, मेडिकल डायरेक्टर, कश्यप मेमोरियल आई बैंक ने बताया की आज यहां कश्यप मेमोरियल आई बैंक और आई डोनेशन अवेयरनेस क्लब के संयुक्त तत्वावधान में हम लोग लगातार सातवीं बार ब्लाईंडफोल्डेड रन फॉर विजन का आयोजन कर रहे हैं। यह 23वां रन फॉर विजन है। यह अपने आप में यूनिक और अनूठा है। इसलिए भी राज्य के बड़े ट्रिबल लीडर्स जैसे शिबू सोरेन, अर्जुन मुंडा, बाबूलाल मरांडी,

महामहिम द्रौपदी मुर्मू ने रन फॉर विजन में न केवल भाग लिया है, बल्कि शपथ पत्र भर के स्थानीय लोगों को नेत्रदान के लिए प्रेरित भी किया है। अब तक हम लोगों ने 1015 नेत्र प्रत्यारोपण किये हैं और पिछले 5 वर्ष में अब तक कुल 490 नेत्र प्रत्यारोपण किये हैं। मुझे इस बात की खुशी है कि झारखंड बिहार का नेत्र प्रत्यारोपण की शुरुआत का श्रेय हमें प्राप्त है और आज भी झारखंड का सबसे ज्यादा नेत्र प्रत्यारोपण हमारी संस्था द्वारा किया जाता है।

अंत में कश्यप मेमोरियल आई हॉस्पिटल के डिप्टी

डायरेक्टर डॉ बिभूति कश्यप ने धन्यवाद ज्ञापन किया और उन्होंने कार्यक्रम में मौजूद सभी गणमान्य व्यक्तियों, नेत्रदान करने वाले लोगों के परिजनों एवं कार्यक्रम में मौजूद सभी लोगों को आयोजन को सफल बनाने के लिए धन्यवाद कहा।

इस अभियान से जुड़ कर नेत्रदान करनेवाले परिवारों को वित्तमंत्री राधाकृष्ण किशोर द्वारा सम्मानित किया गया। सम्मानित होनेवालों में सत्यनारायण अग्रवाल, गोपाल राम अग्रवाल, पुखराज रामपुरिया, उषा परसरामपुरिया, नंदलाल राठौड़, मीरा बुधिया, गीता देवी, राधे

संडे ऑन साइकिल में केन्द्रीय रक्षा राज्य मंत्री संजय सेठ हुए शामिल

आजाद सिपाही संवाददाता

नवी दिल्ली/रांची। फिट इंडिया मूवमेंट के तहत दिल्ली में आयोजित संडे ऑन साइकिल में केन्द्रीय रक्षा राज्य मंत्री संजय सेठ शामिल हुआ। इसे ओलोपियन, पहलवान और पद्म श्री पुरस्कार विजेता साक्षी मलिक ने इंडी दिखारकर रवाना किया। इस अवसर पर केन्द्रीय खेलकूद एवं युवा मामले के मंत्री मनसुख मंडाविया, राज्य मंत्री रक्षा खड्गे, राज्य मंत्री भागीरथ चौधरी और सांसद नवीन जितेंद्र सहित कई सांसद एवं नागरिक मौजूद रहे। देशभर में स्वास्थ्य, फिटनेस और पर्यावरण जागरूकता को बढ़ावा देने के लिए यह पहल की गयी है। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के फिट इंडिया और विकसित भारत



2047 के संकल्प को पूर्ण करने की दिशा में यह एक महत्वपूर्ण अभियान है। संडे ऑन साइकिल अब समाज के हर वर्ग का अभियान बन चुका है। अब तक इसमें समाज के विभिन्न वर्गों - शिक्षकों, पत्रकारों, डॉक्टरों, सशस्त्र बलों के कर्मियों आदि

की सक्रिय भागीदार देखने को मिली है। इस यात्रा को जारी रखते हुए आज आत्मनिर्भर भारत स्वदेशी पर गर्व के संदेश के साथ आज जनप्रतिनिधि भी इसमें शामिल हुए। बहुत जल्द यह अभियान रांची में, बिमल किया जायेगा।

वाहेगुरु से बाढ़ग्रस्त पंजाब और आसपास के लोगों की सलामती के लिए अरदास की



रांची (आजाद सिपाही)। प्राकृतिक आपदा से जूझ रहे पंजाब एवं आसपास के राज्यों के लोगों की सलामती के लिए रविवार को गुरुद्वारा श्री गुरुनानक सत्यग सभा कृष्णा नगर कॉलोनी में विशेष दीवान सजाया गया। गुरुद्वारा श्री गुरुनानक सत्यग सभा कृष्णा नगर कॉलोनी में रोजाना सजनेवाले सुबह के दीवान में सुबह 8.30 बजे से साध संगत द्वारा श्री जगुजी साहिब का सामूहिक पाठ पढ़ा गया। गुरुद्वारा के हेड ग्रंथी ज्ञानी जिवेंदर सिंह ने वाहेगुरु से अरदास कर प्राकृतिक आपदा से जूझ रहे

पंजाब के लोगों की सलामती की अरदास की। सत्यग सभा के प्रधान अर्जुन देव मिट्ठा ने बाद से प्रभावित लोगों के प्रति संवेदना प्रकट की। उन्होंने कहा कि पंजाब में बाढ़ से स्थिति भयावह हो गयी है। वाहेगुरु की मेहर से सब कुछ जल्दी ठीक होने की कामना है। दीवान में सुरेश मिट्ठा, मनीष मिट्ठा, हरगोविंद सिंह, मोहन काठपाल, हरीश मिट्ठा, रमेश पपनेजा, इंद्र मिट्ठा, आशु मिट्ठा, नवीन मिट्ठा, रakesh गिरधर, शीलल मुंजाल, रेशमा गिरधर, इंदु पपनेजा, नीता मिट्ठा, ममता थरेजा, बिमला मिट्ठा समेत अन्य उपस्थित थे।

श्री दुर्गापूजा महोत्सव 2025 को सफल बनाने के लिए युवा दस्ता रांची की बैठक

बैठक में युवा दस्ता के संगठन का विस्तार

आजाद सिपाही संवाददाता

रांची। श्री दुर्गापूजा महोत्सव 2025 को सफल बनाने के लिए युवा दस्ता रांची की बैठक श्री दुर्गा मंदिर, लेक रोड, बड़ा तालाब के प्रांगण में हुई। इसमें युवा दस्ता के संस्थापक सह मुख्य संग्रक्षक राजजीव रंजन मिश्रा, विश्व हिंदू परिषद के महानगर अध्यक्ष कैलाश केसरी, श्री राम बानर सेना के अध्यक्ष लंकेश सिंह, समाजसेवी उषेंद्र रजक, राज किशोर, गोपाल पारीक, कुमार रोशन साहू उपस्थित थे।

बैठक की अध्यक्षता पीयूष आनंद ने की एवं संचालन मंटू दुबे ने किया। बैठक में धन्यवाद ज्ञापन ज्योति शंकर साहू द्वारा दिया गया। बैठक में शामिल सभी नये सदस्यों का स्वागत पट्टा पहनकर किया गया एवं सेवा कार्य का संकल्प दिलाया गया।

बैठक में युवा दस्ता के संगठन का विस्तार किया गया। इसमें मुख्य संरक्षक - संजय सेठ (राज्य रक्षा मंत्री सह सांसद रांची), प्रदीप वर्मा (राज्य रक्षा सांसद), संरक्षक - रामधन बर्मन, कुणाल अजमानी ,



प्रणय कुमार , रवि कुमार पिकू , किशोर साहू , शंकर दुबे , रमेश सिंह , महेश चंद्रा , कुमार गणेश साहू, उपाध्यक्ष - करण नायक, मीडिया प्रभारी - नवनीत पांडेय। युवा दस्ता ग्रामीण क्षेत्र : मुख्य संरक्षक मदन कुमार साहू, अध्यक्ष मनीष कुमार केसरी, कार्यकारी अध्यक्ष मुन्ना बड़ाईक, महामंत्री ज्योति शंकर साहू,

उपाध्यक्ष सिकंदर महतो, मंत्री अरविंद जैसवाल, सह मंत्री हेमंत साहू और कार्यसमिति सदस्य में डॉ विनोद सिंह, दीपन सिंह, अखिलेश मिश्रा, सुनील साहू, सयुधन साहू, सुमित कुमार प्रसाद शामिल हैं। बैठक में जिला प्रशासन से सड़क के गड्ढों को भरने, खराब स्ट्रीट लाइट की ठीक करने, झूलते

हुए बिजली के तार ठीक करने और सुचारू रूप से बिजली व्यवस्था ठीक करने की मांग की गयी। बैठक में तय किया गया कि पिछले 35 वर्षों से राजधानी में पूजा को सौहार्दपूर्ण सफल बनाने वाला युवा दस्ता अपने 36वें वर्ष में और भी जोश एवं गंभीरता से अपनी भूमिका निभायेगा। इस वर्ष

सैकड़ों सक्रिय कार्यकर्ता एवं नौजवान मां भवानी के दर्शनार्थियों के सेवा एवं सुरक्षा में अपना योगदान देंगे। बैठक में निर्णय लिया गया कि 14 सितंबर को युवा दस्ता के सक्रिय एवं युवा कार्यकर्ताओं को प्रशिक्षण दिया जायेगा तथा पूजा के दौरान जिला प्रशासन के साथ तालमेल कर शहर के सभी पूजा

पंडालों की सुरक्षा एवं दर्शनार्थियों की सुरक्षा में हजारों सदस्य कार्य करेंगे।

बैठक को संबोधित करते हुए दस्ता के संस्थापक राजीव रंजन मिश्रा ने कहा कि युवा दस्ता पिछले 35 वर्षों से रांची में अपना सेवा दे रहा है। इस वर्ष दस्ता के 36वें वर्ष भी अपनी सेवा देने के लिए तैयार है। श्री मिश्रा ने नये सदस्यों को युवा दस्ता के द्वारा किये जाने वाले सेवा कार्यों से अवगत कराया।

उषेंद्र रजक ने कहा कि हमारे दस्ता के सदस्य रांची के विभिन्न पूजा पंडालों का भ्रमण कर उनकी समस्याओं को जार्नेंगे। मंटू दुबे ने कहा कि शांतिपूर्ण पूजा संपन्न कराने के लिए सरकार एवं जिला प्रशासन से पूजा के दौरान पूर्ण शराबबंदी करने की मांग गयी है।

बैठक में प्रकाश चंद सिन्हा, कैलाश पारीक, शुभम जैसवाल, रवि कुमार पटवा, अभी कुमार पटवा, संदीप केसरी, विक्की कुमार , राजीव नाग, आयुष सिंह, हिमांशु राज, शुभम चौधरी, सत्यम मिश्रा, युवराज महतो, अखिलेश कुमार मिश्रा, आदित्य कुमार अटल, निशु पासवान, संतोष कुमार सोनी सहित सैकड़ों पदाधिकारी, सदस्य, प्रभारी एवं क्षेत्रीय प्रभारी शामिल थे।

राशिफल	
डॉ एनके बेरा 9431114351	
मे़ष	बहुत दिनों से चली आ रही इच्छाओं की पूर्ति होगी, व्यवसाय में सफलता।
वृष	आप के नये सोच बनेगे, प्रभावशाली व्यक्ति का विकास, पड़ोस फ़िल्ल रहेगा।
मिथुन	आत्मविश्वास की वृद्धि, नये कार्योोजनाओं के प्रति रुचि बढेगी।
कर्क	आमदनी के नये सोच बनेगे, मान-सम्मान, पर-प्रतिष्ठा, धन-ऐश्वर्य की वृद्धि।
सिंह	कामकाज का विस्तार, आप उन्नति के मार्ग की ओर प्रयत्न होगे, संकल्पित कार्य पूरा होगा।
कन्या	काम की गति बढेगी, सुख-समाधानों की वृद्धि, व्यापारिक विस्तार की योजना।
तुला	कुछ संघर्षों के बाद नौकरी-करकारी कार्यों में आसानीत सफलता मिलेगी।
वृश्चिक	सर्तुईक हर्ष तथा उल्लास का वातावरण रहेगा, संकम, धैर्य से काम आसान होगे।
धनु	खनखनारिक प्रवास सफल, विद्या-बुद्धि-प्रतिभा का विकास होगा, महत्वपूर्ण कार्य पूरे होंगे।
मकर	नये व्यवसाय का आरंभ हो सफलता है, परिवार में नागरिक कार्य संपन्न होगा।
कुंभ	रुके हुए कार्य में तेजी, उत्साह-उत्साह बढा रहेगा, समाज के साधन बनेगे,नये लोगों से संपर्क।
मीन	किसी नये कार्य आरंभ करने से पूर्व परिवार में विचार-विमर्श करें, कठिनाइयों पर विजय।

देश-विदेश की खबरों के लिए क्लिक करें

www.azadsipahi.in

टीम तुलसी पटेल ने गिरिडीह चैंबर के पदाधिकारियों से मिल कर मांगा समर्थन

आजाद सिपाही संवाददाता

रांची। फेडरेशन ऑफ झारखंड चैंबर चुनाव को लेकर टीम तुलसी पटेल ने रविवार को गिरिडीह जिले को दौरा किया। टीम के सदस्यों ने गिरिडीह जिला चैंबर ऑफ कॉमर्स के पदाधिकारियों एवं सदस्यों से मुलाकात कर सार्थक संवाद किया। अध्यक्ष पद के दावेदार तुलसी पटेल ने अपने समर्थन में वोट मांगते हुए राज्य के व्यापारियों और उद्योगपतियों के उद्योग का कैसे विकास हो, उस पर अपना विजन बताया। उन्होंने कहा कि झारखंड के व्यापारियों और उद्योगपतियों के सहयोग से उद्योग जगत का समग्र विकास संभव है। सरकार के साथ तालमेल बैठककर काम करेंगे। संवाद करने से ही व्यवसायियों और उद्योगपतियों की समस्याओं



का निदान होगा। तुलसी पटले अपनी टीम का परिचय कराया और कहा कि टीम में अनुभवी और उर्जावान सदस्यों का संगम है। इसका लाभ आने वाले समय चैंबर को मिलेगा। बैठक में लगभग 100 मतदाता शामिल होकर समर्थन और सुझाव दिये। सभी लोगों ने समर्थन देने की बात कही। बैठक के बाद गिरिडीह चैंबर के कोषाध्यक्ष विकास खेत्रन के पिता के निधन पर शोक जताया

गया। मौके पर अशोक पांडे, निर्मल झुनझुनवाला, प्रदीप अग्रवाल, अशोक जैन, गुणवंत सिंह मोंगिया, प्रमोद कुमार, राजेंद्र भरतीया, राजेंद्र बगड़िया श्रवण केडिया, रालेश मोदी, मुकेश जलान, राजेश मोदी, अनूप तुलस्यान, संजय साव, प्रदीप जालान, अनिल टिबट्टेवाल, शंभू जैन, दिनेश खेतान, ध्रुप संशालिया, अनूप तुलस्यान आदि मौजूद थे।

16 से 22 सितंबर तक एक्सपो उत्सव की धूम

मोराबादी में मेले का भूमि पूजन किया गया



आजाद सिपाही संवाददाता रांची। जेसीआई रांची का बहुप्रतीक्षित एक्सपो उत्सव 2025, 16 से 22 सितंबर तक मोरहाबादी मैदान में आयोजित होगा। झारखंड का सबसे बड़ा ट्रेड फेयर और कंज्यूमर फेस्ट माने जाने वाले इस मेले की शुरुआत रविवार को भूमि पूजन के साथ हुई। पूजा-अर्चना के बाद अब अगले 8 दिनों में मोराबादी मैदान मेले के लिए पूरी तरह तैयार हो जायेगा। इस बार एक्सपो उत्सव पूरे 7 दिनों तक चलेगा। दुर्गा पूजा और दिवाली से पहले यह मेला खरीदारी के लिए शानदार मौका लेकर

आयेगा। कपड़े, गाड़ियां, मोटरसाइकिल, ई-स्कूटी, इलेक्ट्रॉनिक्स, फर्नीचर, रसोई उपकरण, घर सजावट का सामान, बच्चों के खिलौने और अन्य जरूरी चीजें यहां आसानी से मिलेंगी। मेले में आम लोगों के लिए प्रवेश सुबह 11 बजे से रात 8 बजे तक होगा। शनिवार को नाइट बाजार और रविवार को कुछ अतिरिक्त समय के लिए मेला खुला रहेगा। भूमि पूजन समारोह में एक्सपो उत्सव के मुख्य संचालक सिद्धार्थ जयसवाल, मंजूषा जयसवाल, अध्यक्ष प्रतीक जैन, विक्रम चौधरी, सौरभ शाह और नवीन गाड़ोदिया मौजूद थे।



मोदी से इजरायल क्या सीख सकता है: राष्ट्रीय सम्मान एक रणनीतिक संपत्ति है

जकी शालोम, द जेरुसलम पोस्ट

पिछले कुछ महीनों में अमेरिका और भारत का संबंध भरोसे के गहरे संकट में फंसा रहा है। इसकी पृष्ठभूमि में टैरिफ नीति पर गंभीर मतभेद, रूस के साथ भारत के विशेष रिश्ते और पाकिस्तान के साथ भारत की सीमा झड़पों को लेकर अमेरिकी प्रशासन का रुख शामिल रहा है।

राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप ने बार-बार इस बात पर नाराजगी जताई कि भारत अमेरिका से आने वाले आयात पर बहुत ऊंचे शुल्क लगाता है। उनके शब्दों में कहें तो 'दुनिया में सबसे ऊंचे शुल्कों में से एक।' इसके जवाब में उन्होंने अमेरिकी टैरिफ बढ़ा कर कुल मिलाकर लगभग 50% तक कर दिए। फिर भी, यह सिर्फ एक मोर्चा था। रूस के साथ घनिष्ठ

संबंध रखने वाला और रूसी कच्चे तेल का सबसे बड़ा खरीदार माने जाने वाला भारत, ट्रंप के तीखे शब्दों का शिकार बना।

ट्रंप ने रूस और भारत की अर्थव्यवस्थाओं को 'मरी हुई अर्थव्यवस्थाएं' कहते हुए दावा किया कि वे 'एक-दूसरे को कुचल रहे हैं,' और उन पर आरोप लगाया कि उनका आपसी व्यापार मार्सको की यूक्रेन के खिलाफ युद्ध मशीन को ताकत दे रहा है।

इतना ही नहीं, उन्होंने यहां तक कह दिया कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी को 'यूक्रेन में मरने वालों की परवाह नहीं है'- यह बयान ने केवल व्यक्तिगत अपमान था, बल्कि भारत की उभरती शक्ति की स्थिति को ठेस पहुंचाने वाला भी था। पाकिस्तान के साथ सीमा झड़पों में ट्रंप ने खुद को एक

निष्पक्ष मध्यस्थ के रूप में पेश करने की कोशिश की। कहा जाता है कि उन्होंने दोनों पक्षों पर भारी दबाव डाला, प्रतिबंधों की धमकी दी और अंततः युद्धविराम करवा दिया। हालांकि, बाद में पाकिस्तान ने उनकी मध्यस्थता की इतनी सराहना की कि उन्हें नोबेल शांति पुरस्कार देने का प्रस्ताव तक रख दिया। दूसरी ओर, नयी दिल्ली ने वाशिंगटन की भूमिका को कमतर आंका, जो दोनों देशों के बीच बढ़ते अविश्वास का एक और संकेत था।

मोदी की कड़ी प्रतिक्रिया केवल आर्थिक और सैन्य तनाव पर आधारित नहीं थी, बल्कि मुख्य रूप से व्यक्तिगत और राष्ट्रीय सम्मान की ठेस पहुंचने से प्रेरित थी। उन्होंने राष्ट्रपति ट्रंप के चार फोन कॉल तक स्वीकार नहीं



किए। इसी संदर्भ में, इजराइल कुछ महत्वपूर्ण सीख सकता है।

खान यूनिस की घटना

25 अगस्त को खान यूनिस के नासर अस्पताल पर इजरायल का गोला गिरा। इस हमले में लगभग बीस लोग मारे गए, जिनमें पत्रकार भी शामिल थे। कुछ ही घंटों में इजराइली सेना के प्रवक्ता, सेना

प्रमुख और प्रधानमंत्री ने प्रतिक्रिया दी। सेना प्रवक्ता ने अग्नि में बयान जारी कर 'निर्दोष नागरिकों' को नुकसान पहुंचने पर माफी मांगी।

सेना प्रमुख ने तुरंत जांच शुरू करने की घोषणा की। प्रधानमंत्री ने इस घटना को 'दुर्भाग्यपूर्ण हादसा' बताया और कहा कि इसकी पूरी तरह जांच होगी। इन तीनों बयानों

से न केवल अंतरराष्ट्रीय जनमत को शांत करने की इच्छा झलकती थी, बल्कि इस घटना के नतीजों को लेकर गहरी चिंता झ्र और शायद घबराहट भी साफ दिखाई दी। नेताओं ने अपने बयानों से यह संदेश दिया कि निर्दोष नागरिकों की मौत की कुछ जिम्मेदारी वे स्वीकार कर रहे हैं। यह संदेश अंतरराष्ट्रीय कानून के लिहाज से खतरनाक मिसाल बन सकता था।

हालांकि, बाद की घटनाओं से पता चला कि कई पीड़ित वास्तव में हमаса से जुड़े हुए थे। लेकिन पूरी जानकारी आने का इंतजार करने के बजाय, इजराइल ने बाहर की दुनिया में ऐसा संदेश दिया मानो वह जिम्मेदारी स्वीकार कर रहा हो और यही उसकी कूटनीतिक और कानूनी स्थिति को कमजोर कर गया।

भारत से सबक

यही वह जगह है जहां हमें मोदी के उदाहरण को देखना चाहिए। ट्रंप के अभूतपूर्व मौखिक हमलों का सामना करते हुए मोदी ने जल्दबाजी में माफी नहीं मांगी, बल्कि कड़ा जवाब देकर राष्ट्रीय सम्मान को कायम रखा। उनका तरीका भले ही कठोर लगा हो, लेकिन इससे साफ संदेश गया कि भारत अधीनस्थ या छोटे देश जैसा व्यवहार स्वीकार नहीं करेगा। इसके विपरीत, खान यूनिस घटना में इजराइल ने जरूरत से ज्यादा परदर्शिता और चिंता दिखा दी। यह तरीका शायद तुरंत नुकसान को कम करने के लिए था, लेकिन इससे दीर्घकालिक रणनीतिक हितों को नुकसान पहुंच सकता है। निष्कर्ष यह है कि किसी भी

देश को कठिन और जटिल परिस्थितियों में भी अपने राष्ट्रीय सम्मान की रक्षा करनी चाहिए। जल्दबाजी में जिम्मेदारी स्वीकार करना कमजोरी के रूप में देखा जा सकता है और दुश्मन इसका फायदा उठा सकते हैं। ऐसे समय में शब्दों में सावधानी और सिद्धांतों में दृढ़ता बेहद जरूरी होती है। भारत से हमें यह सीख मिलती है कि राष्ट्रीय सम्मान कोई विलासिता नहीं, बल्कि दूरगामी रणनीतिक संपत्ति है। यदि इजराइल अपनी स्थिति और सुरक्षा को मजबूत करना चाहता है, तो उसे दुनिया के सामने अटल और मजबूत छवि पेश करनी होगी। इसका मतलब है कि अंतरराष्ट्रीय दबाव चाहे किता भी हो, माफी जैसे बयान देने में जल्दबाजी नहीं करनी चाहिए।

जापान के प्रधानमंत्री ने इस्तीफा दिया

- पार्टी टूटने से बचाने के लिए पद छोड़ा
- बहुमत खोने के बाद इशिबा को हटाने की मांग हुई थी

एजेंसी

टोक्यो। जापान के प्रधानमंत्री शिगेरु इशिबा ने रविवार को इस्तीफा दे दिया है। इशिबा ने यह कदम सत्तारूढ़ लिबरल डेमोक्रेटिक पार्टी (एलडीपी) के भीतर विभाजन से बचने के लिए उठाया है। जापानी मीडिया एनएचके ने यह खबर दी है। इशिबा की गठबंधन सरकार जुलाई में हुए ऊपरी सदन (हाउस ऑफ काउंसिलर्स) के चुनाव में हार गयी थी। इशिबा ने इसके लिए हाल ही में माफी मांगी थी और

कहा था कि वह इस्तीफा देने के बारे में निर्णय लेंगे। चुनावी हार के बाद एलडीपी के भीतर 'इशिबा को हटाओ' आंदोलन तेज हो गया था। पार्टी के कुछ नेताओं और सांसदों ने उनके नेतृत्व पर सवाल उठाए, जिससे उनकी स्थिति कमजोर हो गई थी। अब उनके हटने के बाद एलडीपी में नयी लीडरशिप की दौड़ शुरू होगी।

इशिबा की पार्टी ऊपरी सदन में बुरी तरह हारी थी : इशिबा की लिबरल डेमोक्रेटिक पार्टी (एलडीपी) और उसके सहयोगी दल ने जुलाई में हुए चुनावों में देश के ऊपरी सदन में अपना बहुमत खो दिया था। हालांकि उस समय उन्होंने कहा था कि वो प्रधानमंत्री पद से इस्तीफा नहीं देंगे। जापानी संसद के उच्च सदन में कुल 248 सीटें हैं। इशिबा के गठबंधन के पास पहले से 75 सीटें थीं। बहुमत



बनाये रखने के लिए उन्हें इस चुनाव में कम से कम 50 नयी सीटों की जरूरत थी, लेकिन उन्हें केवल 47 सीटें ही मिल पायीं। इनमें से एलडीपी को 39 सीटें मिली थीं। यह हार पीएम इशिबा के लिए दूसरी बड़ी राजनीतिक असफलता थी। इससे पहले अक्टूबर में निचले सदन का चुनाव हारने के बाद अब यह

गठबंधन दोनों सदनों में अल्पमत में चला गया था। यह पहला मौका था जब गठबंधन ने दोनों सदनों में बहुमत खो दिया है। एलडीपी की स्थापना 1955 में हुई थी। **संसद में बहुमत नहीं, फिर भी इशिबा प्रधानमंत्री बने थे :** जापान में अक्टूबर 2024 में हुए चुनाव में एलडीपी-कोमेतो गठबंधन को 465 में से सिर्फ 215

सीटें मिली थीं। यहां बहुमत के लिए 233 सीटें चाहिए। एलडीपी सबसे बड़ी पार्टी रही। कोई दूसरा गठबंधन सरकार बनाने की स्थिति में नहीं था। मुख्य विपक्षी दल सीडीपीआइ को 148 सीटें मिलीं। बाकी विपक्षी पार्टियां आपस में बंटी हुई हैं। विपक्ष नो-कॉम्फिडेंस मोशन लाना चाहता था, लेकिन इशिबा ने चेतावनी दी कि ऐसा हुआ तो वे संसद भंग करके दोबारा चुनाव कराएंगे। जिससे विपक्ष पीछे हट गया। अब इशिबा डीपीपी जैसे छोटे दलों से मुठ्ठें पर समर्थन लेकर बिल पास करवा रहे हैं। बजट, सब्सिडी और टैक्स सुधार जैसे मामलों में वे विपक्ष के कुछ नेताओं को अपने पक्ष में कर पाये हैं। यानी पीएम को सरकार चलाने के लिए अब विपक्ष के समर्थन की जरूरत पड़ रही है और यही सबसे बड़ा संकट है।

महेंद्र सिंह धोनी क्रिकेटर से एक्टर बने, ‘द चेज’ में दिखेंगे

- टीजर में आर. माधवन के साथ फायरिंग करते दिखे कैप्टन कूल

आजाद सिपाही संवाददाता

मुंबई। टीम इंडिया के सबसे सफल कप्तान महेंद्र सिंह धोनी अब एक्टिंग की दुनिया में अपनी नयी पारी शुरू करने जा रहे हैं। जल्द ही वह एक्टर आर माधवन के साथ ‘द चेज’ में दिखेंगे। रविवार को आर माधवन ने इसका टीजर साझा किया। इसमें धोनी और माधवन ब्लैक अटॉर्नट और सन ग्लासेस पहने हैं। हाथों में गन लेकर ताबड़तोड़ फायरिंग करते नजर आ रहे हैं। यह फिल्म है या वेबसीरीज, यह टीजर में क्लियर नहीं किया गया है। इसे वासन बाला ने डायरेक्ट किया है। वासन आलिया भट्ट की मूवी जिगरा के भी निदेशक थे। टीजर में धोनी का इंट्रो द कूल हीरो के तौर पर दिया गया है।

आर माधवन ने इंस्टाग्राम पर टीजर पोस्ट किया : माधवन ने लिखा कि



वन मिशन। टू फ़ाइटर्स। तैयार हो जाइये, धमोकेदार चेज शुरू होने वाली है। ‘द चेज’ टीजर अब आउट है। डायरेक्टेड बाय वासन बाला। कर्मिंग सुन। हाल ही में माधवन फिल्म ‘आप जैसा कोई’ में नजर आये थे। वहीं, वह जल्द फिल्म ‘धुरंधर’ में दिखेंगे, जो 5 दिसंबर को रिलीज होगी। इस फिल्म में रणवीर सिंह, अक्षय खन्ना और संजय दत्त भी नजर आएंगे। इसे ‘उरी: द सर्जिकल स्ट्राइक’ के डायरेक्टर आदित्य धर ने निर्देशन किया है। फिल्म को आदित्य धर, ज्योति देशपांडे और लोकेश धर ने मिलकर प्रोड्यूस किया है।

धोनी की बाॅयोपिक हिट हुई थी :

धोनी के जीवन पर फिल्म ‘एमएस धोनी: द अनटोल्ड स्टोरी’ बन चुकी है। यह साल 2016 में रिलीज हुई थी। फिल्म में सुशांत सिंह राजपूत ने धोनी का किरदार निभाया था। इसके अलावा दिशा पाटनी, कियारा आडवाणी, अनुपम खेर और भूमिका चावला जैसे कलाकार भी इसमें अहम भूमिकाओं में दिखे थे। करीब 104 करोड़ रुपये के बजट में बनी इस फिल्म ने बॉक्स ऑफिस पर करीब 216 करोड़ रुपये कमाये थे।

2020 में इंटरनेशनल क्रिकेट से संन्यास लिया था : धोनी फिलहाल इंटरनेशनल क्रिकेट से संन्यास ले चुके हैं। आइपीएल और सीएसके की ओर से खेलते हैं। धोनी ने 2004 में इंटरनेशनल क्रिकेट में डेब्यू किया था। 2007 में कप्तान बनकर उन्होंने भारत को टी-20 वर्ल्ड कप जिताया। 2011 में उन्होंने भारत को वनडे वर्ल्ड कप भी जिताया। उन्होंने 2020 में इंटरनेशनल क्रिकेट को अलविदा कह दिया था

हिमाचल में अब तक 350 लोगों की हुई मौत



- 4.07 लाख करोड़ का नुकसान, उत्तराखंड में बादल फटा, पीएम मोदी 9 सितंबर को पंजाब जायेंगे

आजाद सिपाही संवाददाता

नयी दिल्ली। हिमाचल प्रदेश में इस मानसून सीजन (24 जुलाई से लेकर 7 अगस्त) तक बारिश-बाढ़, लैंडस्लाइड से जुड़ी घटनाओं में 366 लोगों की मौत हो चुकी है। राज्य सरकार को १4 लाख करोड़ की संपत्ति का नुकसान भी हुआ है। शिमला में 116% और कुल्लू में 113% बारिश हुई, जो सामान्य से

दोगुनी है। पंजाब के सभी 23 जिले अभी भी बाढ़ से प्रभावित हैं। मौसम विभाग के मुताबिक, राज्य में अगले 3 दिन बारिश का अलर्ट नहीं है, लेकिन लुधियाना का ससराली बांध टूटने का खतरा बना हुआ है। पीएम मोदी 9 सितंबर को बाढ़ प्रभावित इलाके का दौरा करेंगे। उत्तराखंड के उत्तरकाशी जिले के नौगांव में शनिवार शाम को बादल फटा। बाजार और कई घरों में पानी-मलबा घुस गया। सड़क पर खड़ी कई गाड़ियां भी बह गयीं। उत्तर प्रदेश के मथुरा में यमुना नदी शहर से 1 किमी दूर तक पहुंच गई है। घाट किनारे के आश्रमों में 5 फीट तक पानी भरा है। वृंदावन परिक्रमा मार्ग पानी में डूबा है।

पूर्व पीएम देवगौड़ा के पोते को जेल में काम मिला बेंगलुरु की अग्रहारा जेल में लाइब्रेरी संचालेगा, रोजाना मिलेंगे 522 रुपये

आजाद सिपाही संवाददाता

बेंगलुरु। पूर्व जेडीएस सांसद और पूर्व प्रधानमंत्री एचडी देवगौड़ा का पोता प्रज्वल रेवन्ना जेल में लाइब्रेरी संचालेगा। बेंगलुरु की परंपन्ना अग्रहारा सेंट्रल जेल प्रशासन ने रविवार को यह जानकारी दी। जेल प्रशासन ने बताया कि रेवन्ना का काम जेल की लाइब्रेरी में कैदियों को किताबें जारी करना और उनका रिकॉर्ड संचालना होगा।

जेल के नियमों के मुताबिक कैदियों को हर महीने कम से कम 12 दिन यानी हफ्ते में तीन दिन काम करना जरूरी है। अगर रेवन्ना तय शर्तों को पूरा करे हैं तो उन्हें हर दिन की मजदूरी 522 रुपये के हिसाब से मिलेगी। हर कैदी को उसकी योग्यता



और इच्छा के आधार पर काम दिया जाता है। दरअसल, बेंगलुरु की स्पेशल कोर्ट ने 2 अगस्त को रेवन्ना को नौकरानी से रेप केस में उपक्रैद की सजा सुनायी थी।

रेवन्ना पर 4 मामले दर्ज, 1 में दोषी
बेंगलुरु की स्पेशल कोर्ट ने 2 अगस्त को रेवन्ना पर 11.50 लाख रुपए का जुमाना भी लगाया था। इसमें से 11.25 लाख रुपए पीड़ित को दिए जाएंगे। इससे पहले कोर्ट ने 1 अगस्त को रेवन्ना को दोषी ठहराया था। उसके खिलाफ रेप के कुल 4 मामले दर्ज हैं। इनमें से यह पहला केस है, जिसमें उसे दोषी ठहराया गया है।

महिलाओं से यौन उत्पीड़न का आरोप
रेवन्ना के परिवार के फार्महाउस में काम करने वाली 47 साल की महिला ने अप्रैल 2023 में रेवन्ना के खिलाफ एफआइआर दर्ज करायी थी। इसमें रेवन्ना पर 2021 से कई बार रेप करने और किसी भी घटना के बारे में बताने पर वीडियो लीक करने की धमकी देने का आरोप लगाया था। इसके साथ ही प्रज्वल रेवन्ना का नाम कर्नाटक सेक्स सैफ्टी उम्पीअन का आरोप भी है। उसके खिलाफ रेप, छेड़छाड़, ब्लैकमेलिंग और धमकी देने के आरोपों में अब तक 4 एफआइआर दर्ज की गयी हैं।

उपराष्ट्रपति चुनाव से पहले आज विपक्षी दल करेंगे माॅक वोटिंग

आजाद सिपाही संवाददाता

नयी दिल्ली। नौ सितंबर को उपराष्ट्रपति चुनाव होने हैं। इसके लिए राजनीतिक पार्टियों में सुगबुगाहट तेज होती दिख रही है। इसी बीच इंडिया ब्लॉक ने रविवार को जानकारी दी कि उपराष्ट्रपति चुनाव से पहले सोमवार को विपक्षी सांसदों को वोटिंग की प्रक्रिया की जानकारी दी जाएगी। इसके बाद इसी शाम

को कांग्रेस अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खरगे उनके लिए संसद परिसर के एनेक्सी में डिनर का आयोजन करेंगे। इतना ही नहीं सूत्रों ने ये भी बताया कि सोमवार दोपहर लगभग 2:30 बजे संसद भवन के सेंट्रल हॉल में हम्मक पोलह्न यानी फर्जी वोटिंग भी कराई जाएगी ताकि सांसद वोटिंग प्रक्रिया को समझ सकें।

उपराष्ट्रपति चुनाव के रिटर्निंग ऑफिसर और राज्यसभा के सचिव पीसी मोदी ने बताया कि मतदान नौ सितंबर को सुबह 10 बजे शुरू होगा और शाम 5 बजे बंद होगा। मतदान संसद भवन के कमरे नंबर एफ101, वसुधा में होगा। वोटों की गिनती उसी दिन शाम छह बजे शुरू होगी और तुरंत परिणाम घोषित किया जायेगा।

Yogendra Mistri : 9199053376 Amin Macanic : 8617878251

NEW MOTOR KRAFT

(A Multi Brand Car Service Center)

SERVICE DENTING AND PAINTING BREAKDOWN SERVICE
AC WORK PICKUP AND DROP SERVICE FREE
Available Genuine Parts With Genuine Service Charges.

Add : Khelgaon Road, Khatanga, Ranchi, Jharkhand

GO *Green* **HURRY-E**

CHARGE ANYWHERE
No Charging Station Required
3 Hours Charging Time

100 km Cost ₹15

3 Years Warranty

Range Upto 130 - 200 Kms As Per Model

Available in Registration & Non Registration Models

CONTACT FOR DEALERSHIP

J.K SALES

Pillar No. 83, In Between O.T.C. Ground & Piska More,
Ratu Road, Beside M-Bazar, Lakdi Tall, Ranchi
M. - 9386070011

वर्मा प्रेस प्रा० लि० राँची

Verma's Today

शृंखला की निम्न पुस्तकें सर्वत्र उपलब्ध हैं—

Class - X	Class - IX
* Hindi ₹ 150	* Hindi ₹ 150
* English ₹ 150	* English ₹ 150
* Mathematics ₹ 150	* Mathematics ₹ 150
* Science ₹ 150	* Science ₹ 150
* Social Science ₹ 150	* Social Science ₹ 150
* Sanskrit ₹ 150	* Sanskrit ₹ 150
* Hindi - B ₹ 150	* Hindi - B ₹ 150
* Hindi Vyakaran-- II ₹ 120	* Hindi Vyakaran-- II ₹ 120
* English Grammar-- II ₹ 130	* English Grammar-- II ₹ 130
* Sanskrit Vyakaran-- II ₹ 100	* Sanskrit Vyakaran-- II ₹ 100
* Hindi Practical ₹ 60	* Hindi Practical ₹ 60
* English Practical ₹ 60	* English Practical ₹ 60
* Maths. Practical ₹ 70	* Maths. Practical ₹ 70
* Science Practical ₹ 70	* Science Practical ₹ 70
* S. Science Practical ₹ 75	* S. Science Practical ₹ 75
* Sanskrit Practical ₹ 60	* Sanskrit Practical ₹ 60
* Maths. Practical (Combined) ₹ 90	* Maths. Practical (Combined) ₹ 90
* Science Practical (Combined) ₹ 90	* Science Practical (Combined) ₹ 90

English Medium	English Medium
* Mathematics ₹ 200	* Mathematics ₹ 230
* Science ₹ 220	* Science ₹ 200
* Social Science ₹ 230	* Social Science ₹ 230
* Maths. Practical ₹ 80	* Maths. Practical ₹ 80
* Science Practical ₹ 80	* Science Practical ₹ 80
* S. Science Practical ₹ 100	* S. Science Practical ₹ 90

मिलते-जुलते नाम वाली नकली पुस्तकों से सावधान !

